डेविड का स्तुतिगान - 23

प्रभु मेरे रक्षक हैं; मेरे पास वह सब कुछ है जो मुझे चाहिए।

वह मुझे हरी चराइयों में विश्राम कराते हैं
व मुझे शान्त जल के पास ले जाते हैं
क्योंकि वही सभी सुखों के निमित्त हैं।

वह मेरी आत्मा को परिष्कृत करते हैं।
वह मुझे सही राहों का मार्गदर्शन करते हैं जो उनकी भलाई को दर्शाते हैं

मेरे जीवन की राह कितनी भी अँधेरी हो मुझे बिलकुल भय नहीं,
उनकी छड़ी और चरवाहे की लाठी मुझे सुखदाई अनुभव देते हैं।

वह मेरे शत्रुओं के सामने मेरे लिये भोजन तैयार करते हैं।
और जब सिर पर वह आशीष का तेल उण्डेलते हैं
उनका दिव्य प्रेम छलकने लगता है।

निश्चय ही उनकी दयालुता और प्रेम जीवन भर मुझ पर बना रहेगा,
और मैं प्रभु के धाम में सर्वदा वास करूंगा।

क्रिसमस पर्व की बधाई

सहज योग परिवार से
आप सभी को क्रिसमस की बहुत बहुत बधाई

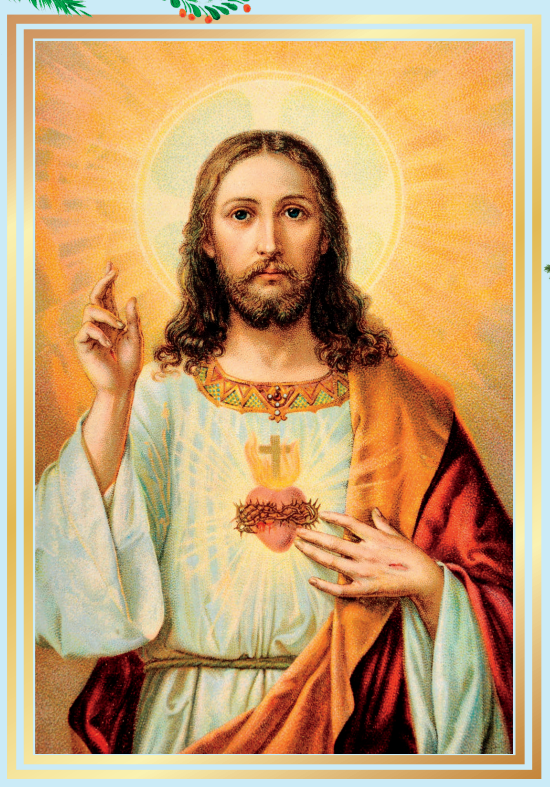

येशु मसीह - प्रेम, शांति, करुणा, क्षमा के प्रतीक

हर वर्ष 25 दिसंबर को मनाया जाने वाला पर्व, क्रिसमस, येशु मसीह के जन्म को चिन्हित करता है और उसका पुण्यस्मरण कराता है। बच्चों से लेकर बड़ों तक, हर कोई इस दिन का आनंद ज़्यादातर क्रिसमस ट्री सजाकर, कुकीज़ सेंक कर और उपहारों का आदान-प्रदान करके लेता है।

क्रिसमस, दुनिया में येशु मसीह के जन्म का स्मरण करते हुए, एक आध्यात्मिक वास्तविकता का भी प्रतीक है। देवत्व का अवतार येशु मसीह हैं। उनका जन्म ऐसे समय में हुआ था जब भूमि पर अज्ञानता, अंधविश्वास, लालच, घृणा और पाखंड का शासन था।

उनके आगमन का दिव्य रहस्योद्घाटन

लगभग 2,000 साल पहले, नाज़रेथ शहर की मैरी नाम की एक युवती से गेब्रियल नाम के एक देवदूत ने मुलाकात की थी। उसने यहूदी स्त्री से कहा कि उसका एक पुत्र होगा जिसका नाम येशु होगा, जो परमेश्वर का पुत्र होगा।

इस समय, मैरी की अपने होने वाले पति जोसेफ से मंगनी हो चुकी थी। जब यूसुफ को बताया गया, तो वह आहत और भ्रमित हो गया क्योंकि उसने मैरी पर विश्वास नहीं किया। देवदूत गेब्रियल ने जोसेफ से मुलाकात की और उससे कहा, "मरियम को अपनी पत्नी के रूप में घर ले जाने से डरो मत, क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा है," और उसका पुत्र येशु लोगों को उनके पापों से बचाएगा।

बेथलेहम की यात्रा और येशु का जन्म

मरियमऔरउसकाभावीपति, जोसेफ, नाज़रेथ नामक नगर में रहते थे। लेकिन रोमन सम्राट, सीज़ार ऑगस्टस द्वारा आदेशित जनगणना के लिए पंजीकरण कराने के लिए उन्हें बेथलेहम शहर की यात्रा करनी पड़ी। नाज़रेथ और बेथलेहम दोनों उस देश में हैं जिसे अब इज़राइल कहा जाता है। नाज़रेथ से बेथलेहम तक की दूरीलगभग 65 मील (105 किमी) है, औरयात्रा में शायद उन्हें कई दिन लगे।

जबजोसेफऔरमरियमबेतलेहेम पहुँचे, तो उनके पास ठहरने के लिए कोई जगह नहीं थी क्योंकि सराय पहले से ही भरी हुई थी। उन्होंने एक अस्तबल में रात बिताई जहाँ पशुओं को रखा गया था। फर्श पर शायद ताजी घास थी जिसे वे बिस्तर के लिए इस्तेमाल करते थे।

उस रात, येशु का जन्म हुआ। वहाँ कोई पालना नहीं था, इसलिए उन्होंने बच्चे येशु को एक चरनी में रखा, जो पशुओं के लिए रखी थी। चरनी में ताजा घास थी और नवजात शिशु के लिए आरामदेह बिस्तर बना दिया।

३ मनीषीयों का आगमन

कुछ समय बाद, पूर्वी देशों के मनीषीयों या ज्योतिषियों ने आकाश में एक तारे को देखा जो एक नए राजा के जन्म का संकेत था। वे नए राजा येशु की उपासना करने के लिए यरूशलेम और बेथलेहम के आसपास के क्षेत्र यहूदिया आए।

ज्योतिषी बेथलेहम की ओर बढ़ते रहे और तारे के पीछे तब तक चले जब तक कि वह सीधे उस घर के ऊपर न पहुंच गया जहां येशु था। उन्होंने मरियम और येशु को घर में पाया और उनकी आराधना करने के लिए घुटने टेके। वे येशु को सोना, लोबान, और सुगंधित गोंद, प्राचीन दुनिया की कुछ बेहतरीन चीज़ें लाए।

राजा हेरोड के अत्याचार और मिस्र की यात्रा

इस बीच, यहूदिया के राजा हेरोड ने तीन पंडितों से 'नए राजा' के आगमन के बारे में सुना था और उसे डर था कि यह नया "राजा" उसे यहूदिया के राजा के रूप में बदल देगा। वह यह नहीं समझ पाया कि येशु बड़ा होकर परमेश्वर के आध्यात्मिक राज्य का राजा बनेगा, न कि यहूदिया का राजा। हेरोड वास्तव में येशु को खोजना और उसे मार डालना चाहता था।

जब हेरोड को पता चला कि ज्योतिषी उसे यह बताने के लिए वापस नहीं आए हैं कि येशु को कहाँ ढूँढ़ें तो वह क्रोधित हो गया। उसने अपने सैनिकों को दो साल से कम उम्र के सभी बच्चों को मारने के लिए बेथलेहम भेजा, यह सोचकर कि येशु निश्चित रूप से मारे गए लोगों में से एक होगा।

परन्तु परमेश्वर ने जोसेफ को स्वप्न में मिस्र भाग जाने को कहा था। जोसेफ मरियम और येशु को मिस्र में रहने के लिए ले गया जहाँ वे हेरोड से सुरक्षित रहेंगे। हेरोड, मरियम और येशु हेरोड के मरने तक मिस्र में रहे, और फिर वे नाज़रेथ लौट आए। हेरोड के आसपास के लोग एक के बाद एक चमत्कार देखने लगे।

येशु मसीह के चमत्कार

येशु मसीह के चमत्कार और अनगिनत चमत्कार जो उसने पृथ्वी पर अपने समय के दौरान किए, वे अद्भुत हैं। येशु, हमारे उद्धारकर्ता जहां कहीं भी गए, अपने आसपास के सभी लोगों के जीवन को बदल दिया। येशु द्वारा किए गए कई चमत्कारों के सुसमाचार का दस्तावेजीकरण मैथिव, मार्क, ल्यूक और जॉन ने किया है ।

ये चमत्कार लोगों के जीवन में द्वारा किए गए अनगिनत चमत्कारों के केवल एक छोटे से अंश का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह जॉन के सुसमाचारों में सबसे अच्छी तरह से समझाया गया है:

और भी बहुत से काम हैं जो येशु ने किए, यदि वे सब के सब लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं। तथास्तु। (जॉन 21:25)

पानी को दाखरस में बदलने से लेकर मरे हुओं को जिलाने तक येशु मसीह के चमत्कार कई प्रकार के थे। लगभग 17 विशिष्ट उपचार चमत्कार दर्ज किए गए हैं। येशु मसीह के चमत्कारों में असाध्य रोगों को ठीक करना और शारीरिक रूप से उपस्थित हुए बिना ठीक करने की क्षमता शामिल थी। साथ ही, येशु मसीह ने सभी क्षेत्रों पर अधिकार का प्रयोग किया। उसने प्रकृति, राक्षसों, जीवन और मृत्यु पर अपने अधिकार का प्रदर्शन किया।

इसके अलावा, येशु मसीह के सभी चमत्कार सार्वजनिक रूप से बड़ी भीड़ के सामने किए गए जैसे कि पाँच हज़ार को खाना खिलाना और चार हज़ार को भोजन उपलब्ध कराना। चश्मदीद गवाहों द्वारा रिकॉर्ड किए गए चमत्कार लोगों के लिए फायदेमंद थे, और बिना किसी सहारा के एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए किए गए थे।

प्रेम और शक्ति के अलौकिक कार्यों को करते समय, येशु ने अपनी दिव्य प्रकृति, असीम करुणा, प्रकृति पर पूर्ण अधिकार प्रकट किया, और दिखाया कि वह परमेश्वर का पुत्र और वादा किया हुआ मसीहा है।

येशु मसीह के चमत्कार उसकी दिव्यता और हर चीज पर पूर्ण शक्ति का प्रमाण हैं। पृथ्वी पर उसके समय के दौरान, बहुत से लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से उसके चमत्कारों को देखा। लोग चमत्कारों में विश्वास करते थे क्योंकि उनकी पर्याप्त संख्या थी और उन्होंने चार सुसमाचारों में दर्ज चमत्कारों की तुलना में अधिक चमत्कार किए।

येशु मसीह का क्रूसारोपण - पुनरुत्थान की कुंजी - क्षमा

येशु मसीह का सूली पर चढ़ना प्राचीन दुनिया में इस्तेमाल किया जाने वाला मृत्युदंड का सबसे भयानक, दर्दनाक और शर्मनाक रूप था। निष्पादन की इस पद्धति में पीड़ित के हाथ और पैर बांधना और उन्हें लकड़ी के एक क्रॉस पर कीलों से ठोंकना शामिल था। मनुष्यों द्वारा किए गए पापों के लिए प्रभु ने अपना जीवन बलिदान कर दिया और उन्होंने हमें सांसारिक बंधनों को काटने और क्षमा द्वारा हमारे सच्चे दिव्य स्वरूप को पुनर्जीवित करने के लिए सबसे बड़ा हथियार दिया।

सहजयोग संस्थापिका परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी के शब्द प्रभु मसीह पर

"...यह दिन हमारे लिए यह याद रखने का है कि ईसा मसीह का जन्म इस धरती पर हुआ था। एक इंसान के रूप में, वह इस धरती पर आए। और उनके सामने जो कार्य था वह मानवीय जागरूकता की समझ की भावना को प्रबुद्ध करना था, लेकिन हम कह सकते हैं कि यह वास्तविक रूप से मानव के भीतर की जागरूकता है, कि वे यह शरीर नहीं हैं, बल्कि वे आत्मा हैं। मसीह का संदेश उनका पुनरुत्थान है। यानी आप अपनी आत्मा हैं न कि शरीर। और उनहोंने अपने पुनरूत्थान के द्वारा दिखाया, कि कैसे वह शुद्ध आत्मा के राज्य में उदित हुए ...। और जब वह इस धरती पर आए, मनुष्य के रूप में, एक शरीर में, वह एक और बात दिखाना चाहते थे कि आत्मा का धन से कोई लेना-देना नहीं है, शक्ति से कोई लेना-देना नहीं है।

(10 दिसंबर 1979, लंदन, यू के)

मानवता के लिए येशु मसीह का संदेश

"तुम अपने परमेश्वर के प्रति अपने पूरे मन से, और अपने पूरे प्राण से, और आपकी सारी बुद्धि से प्रेम रखना। तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना" (मैथिव 22:37-39)

शांतिपूर्ण और आनंदमय जीवन के लिए इस संदेश को कैसे आत्मसात करें? -एकमेव सहज योग मार्ग से-

येशु मसीह का मानवता के प्रति यह एक बहुत बड़ा और गहरा संदेश है।

येशु मसीह का पुनरुत्थान मानव जागरूकता के ज्ञान का प्रतीक है, और सहज योग आत्म-साक्षात्कार की प्रक्रिया के माध्यम से इस जागरूकता का यथार्थी-करण है। सहज योग सभी धर्मों के सत्य को आत्मसात कर व उनकी सीमाओं को पार कर साधक को सच्ची आध्यात्मिकता की आधारशिला में स्थित करता है। सहज का अर्थ है 'आपके साथ जन्मा' और योग का अर्थ है 'आत्मा' का सर्वव्यापी शक्ति या परमात्मा के साथ मिलन। आत्मा हमारे अस्तित्व में परमात्मा के प्रतिबिंब का प्रतिनिधित्व करती है और योग घटित होने के लिए त्रिकास्थि में स्थित 'कुंडलिनी' नामक दिव्य ऊर्जा होती है और इच्छुक में जागृत होकर आत्म-साक्षात्कार प्रदान कर आध्यात्मिक पोषण करती है। वस्तुता, यह दिव्य ऊर्जा 'हौली घोस्ट' का प्रतिबिंब है जो सोइ हुयी अवस्था में होता है। लेकिन जब साधक योग की इच्छा करता है तो कुंडलिनी छह ऊर्जा केंद्रों को एकीकृत करती है और फॉन्टानेल हड्डी को छेदने के बाद ब्रह्मांडीय ऊर्जा या 'ब्रह्मशक्ति' को आंतरिक अस्तित्व में प्रवेश करने के लिए रास्ता बनाती है। योग घटित होता है जिसकी प्रचिती भीतर में सुखद अनुभव और हाथ की हथेलियों और सिर के शीर्ष पर दिव्य ठंडी हवा की लहरियां या 'चैतन्य' (जैसा कि बाइबिल में वर्णित है) सूक्ष्म ऊर्जा के रूप में प्रवाहित होता है । इस स्थिति को परिपक्व करने के लिए सुबह और शाम का नियमित ध्यान और सप्ताह में एक बार एक निर्दिष्ट ध्यान केंद्र में सामूहिक ध्यान उपयोगी होता है। इस प्रकार, सच्ची आध्यात्मिकता का मार्ग शुरू होता है और साधक अनंत आनंद और समग्र कल्याण का आनंद लेने के लिए व हमेशा उनके साथ रहने के लिए परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करता है। यह दिव्य न्याय के समय का भी प्रतीक है, जो लोग परमेश्वर को खोजते हैं वे बचाए जाएंगे जैसा पवित्र बाइबिल में भी प्रतिष्ठापित है।

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी द्वारा आदि ऊर्जा 'कुंडलिनी' को जागृत कर आत्म-साक्षात्कार के अनुभव को बहुत आसान बना दिया है और आज सत्य के साधक विश्व के 140 से अधिक देशों में अपने स्वहित के लिए सहज योग जुड़ गए हैं और इस सुख को प्राप्त करने के लिए यशु मसीह ने वादा किया था। अधिक जानकारी और सहज योग के लाभों के लिए कृपया वेबसाइट देखें या हमसे फोन पर संपर्क करें।

आने वाला वर्ष आपको आंतरिक शांति का आनंद लेने के लिए
सच्चा यौगिक जीवन प्रदान करे
और दुनिया में स्थायी शांति लाने में सहायक बनें - आमीन।

Sahaja Darshan Prachaar Prasaar Samiti
adlakhagk@gmail.com | +91 98712 78936
www.nirmaldham.org
www.sahajayogamumbai.org
www.sahajayoga.org.in | Toll Free - 1800 2700 800